7
सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(जन्म : 1896 ई. / मृत्यु : 1961 ई.)

परिचय –

छायावाद के प्रमुख कवियों में 'निराला' उपनाम से प्रसिद्ध सूर्यकान्त त्रिपाठी का जन्म वसंत पंचमी को बंगाल के मेदिनीपुर जिले में हुआ था। उनकी औपचारिक शिक्षा हाईस्कूल तक हुई। तदुपरान्त हिन्दी, संस्कृत तथा बांग्ला का अध्ययन स्वयं किया। तीन वर्ष की बाल्यावस्था में माँ और युवा अवस्था के पहुँचते–पहुँचते पिताजी साथ छोड़कर इस संसार से चले गये। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद फैली महामारी में पत्नी, भाई, भाभी और चाचा चल बसे। अंत में पुत्री सरोज की मृत्यु ने निराला को भीतर तक झकझोर दिया। अपने जीवन में निराला ने मृत्यु का जैसा साक्षात्कार किया था, उसकी अभिव्यक्ति उनकी कई कविताओं में दिखाई देती है। विषम परिस्थितियों में भी उन्होंने जीवन से समझौता न करते हुए अपने तरीके से ही जीवन जीना बेहतर समझा।

कविता के साथ उपन्यास, कहानी, आलोचना विधाओं को लिखने वाले निराला मूलतः कवि थे। उनकी कविताओं में जीवन का यथार्थ चित्रण यथा मानव की पीड़ा, परतंत्रता के प्रति तीव्र आक्रोश, अन्याय तथा विषम जीवन परिस्थितियों के प्रति संघर्ष करने की अदम्य गूँज सुनाई देती है।

कृतियाँ –

अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, रानी और कानी, नये पत्ते, राम की शक्ति पूजा, अर्चना, आराधना।

पाठ परिचय –

कवि निराला की प्रस्तुत कविता 'अभी न होगा मेरा अन्त' जीवन की युवावस्था को अभिव्यक्त करते हुए हृदय की जीवन्तता को प्रकट करती है। जीवन रूपी वन में वसन्त ऋतु रूपी हृदयोत्साह कभी–भी समाप्त होने वाला नहीं है। निराला का काव्य किसी एक मुकाम पर आकर ठहरने वाला नहीं है। वे इस कविता के माध्यम से निरन्तर उत्साह बनाये रखना चाहते हैं। तभी तो वे कहते हैं – "अभी न होगा मेरा अंत, अभी–अभी ही तो आया है मेरे जीवन में मृदुल वसन्त।" जीवन का यह पड़ाव हाथ पर हाथ रखकर बैठने के लिए न होकर जीवन के कर्म–सौन्दर्य को निष्ठापूर्वक बढ़ाते रहने के लिए है। यह कविता निराला के प्रखर आशावाद एवं जिजीविषा से लबरेज है। शब्द चयन एवं भाव सौन्दर्य अनुपम है।

'मातृ–वन्दना' कविता में निराला का राष्ट्रप्रेम मुखरित हुआ है, जिसमें वे अपने अर्जित सभी कर्मफलों को माँ भारती के चरणों में अर्पित कर अपने को धन्य महसूस कर रहे हैं। कवि जीवन–पथ के सभी विघ्न–बाधाओं को पार करता हुआ माँ की सेवा में अपना बलिदान कर उसे हर दुख से मुक्त करना चाहता है। विनय शिल्प में लिखी गयी यह एक अद्‌भुत कविता है।

अभी न होगा मेरा अन्त

अभी न होगा मेरा अन्त
अभी–अभी ही तो आया है
मेरे जीवन में मृदुल वसन्त –
अभी न होगा मेरा अन्त।

हरे–हरे ये पात
डालियाँ कलियाँ कोमल गात !

मैं ही अपना स्वप्न–मृदुल–कर
फेरूँगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्यूष मनोहर

पुष्प–पुष्प से तन्द्रालस लालसा खींच लूँगा मैं
अपने नव जीवन का अमृत सहर्ष सींच दूँगा मैं

द्वार दिखा दूँगा फिर उनको
है मेरे वे जहाँ अनन्त –
अभी न होगा मेरा अन्त।

मेरे जीवन का यह है जब प्रथम चरण
इसमें कहाँ मृत्यु?
है जीवन ही जीवन
अभी पड़ा है आगे सारा यौवन
स्वर्ण–किरण कल्लोलों पर बहता रे, बालक–मन,
मेरे ही अविकसित राग से
विकसित होगा बन्धु, दिगन्त;
अभी न होगा मेरा अन्त।

मातृ-वन्दना

नर जीवन के स्वार्थ सकल
बलि हों तेरे चरणों पर, माँ
मेरे श्रम सिंचित सब फल।

जीवन के रथ पर चढ़कर
सदा मृत्यु पथ पर बढ़कर
महाकाल के खरतर शर सह
सकूँ, मुझे तू कर दृढ़तर;
जागे मेरे उर में तेरी
मूर्ति अश्रु जल धौत विमल
दृग जल से पा बल बलि कर दूँ
जननि, जन्म श्रम संचित फल।

बाधाएँ आएँ तन पर
देखूँ तुझे नयन मन भर
मुझे देख तू सजल दृगों से
अपलक, उर के शतदल पर;
क्लेद युक्त, अपना तन दूँगा
मुक्त करूँगा, तुझे अटल
तेरे चरणों पर देकर बलि
सकल श्रेय श्रम संचित फल।

कठिन शब्दार्थ

मृदुल	–	मनोहर, सुन्दर	**सकल**	–	सारा	**पात**	–	पत्ते
श्रम	–	मेहनत	**स्वप्न**	–	सपना	**उर**	–	हृदय
लालसा	–	इच्छा	**संचित**	–	कमाया हुआ	**यौवन**	–	जवानी,युवावस्था
दृग	–	आँख	**शतदल**	–	कमल			

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. 'मृदुल वसन्त' जीवन के किस पड़ाव का प्रतीक है?
   (क) बचपन (ख) यौवन (ग) बुढ़ापा (घ) उपर्युक्त सभी
2. शतदल का शब्दार्थ है –
   (क) पतझड़ (ख) कुमुदिनी (ग) कमल (घ) भँवरा

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

3. 'अभी न होगा मेरा अन्त' कविता में किस ऋतु के आगमन की बात कही गई है?
4. 'हरे–हरे ये पात' पंक्ति में कौन–सा अलंकार है?
5. कवि का कविता में किस प्रथम चरण की ओर संकेत है?
6. 'फेरूँगा निद्रित कलियों पर' पंक्ति में निद्रित कलियों का आशय क्या है?
7. 'मातृ–वन्दना' में कवि ने माँ संबोधन का प्रयोग किसके लिए किया है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

8. कविता 'अभी न होगा मेरा अंत' के अनुसार बसंत आगमन पर प्रकृति में कौन–से परिवर्तन परिलक्षित होते हैं?
9. कविता 'मातृ–वन्दना' के अनुसार कवि माँ के चरणों में क्या–क्या समर्पित करना चाहता है?

निबंधात्मक प्रश्न –

10. 'अभी न होगा मेरा अंत' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए?
11. 'मातृ–वन्दना' कविता का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए?
12. निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
    (क) हरे–हरे ये पात .... अमृत सहर्ष सींच दूँगा मैं।
    (ख) मेरे जीवन का यह है जब प्रथम चरण .... अभी न होगा मेरा अन्त।
    (ग) बाधाएँ आएँ तन पर .... सकल श्रेय श्रम संचित फल।